

Padma Shri



SHRI SUBHASH KHETULAL SHARMA

Shri Subhash Khetulal Sharma is a distinguished practitioner and proponent of natural farming, having dedicated over 30 years to the experimentation and adoption of sustainable agricultural techniques. His methods prioritize the conservation of natural resources in their purest form, ensuring the production of toxin-free agricultural products.

2. Born on 13th December, 1952 at Yavatmal, Maharashtra, Shri Sharma completed his B. Com I from Amolkchand College, Yavatmal. A key innovation in Sharma's farming approach is contour farming with intercepted furrows, which ensures efficient water storage and percolation contributing to groundwater replenishment. His system not only prevents crop damage from excess water but also supports sustainable irrigation practices.

3. One of the most significant impacts of Shri Sharma's techniques is the substantial reduction in cultivation costs. By eliminating chemical fertilizers, pesticides, insecticides, and weedicides, farmers achieve higher soil organic carbon levels-rising from 0.5% to 2%-which fosters improved soil fertility and productivity. His approach enhances soil porosity, biological activity, and overall crop health. The complete avoidance of insecticides and pesticides helps preserve beneficial insects and birds, which naturally regulate pests. Additionally, mixed cropping, crop rotation, and boundary tree plantations contribute to ecosystem balance by minimizing pest infestations and maintaining temperature stability. Additionally, his promotion of natural farming has encouraged farmers to rear cows, further supporting sustainable agriculture.

4. Shri Sharma has actively disseminated his techniques among farmers, researchers, NGO workers, and agricultural extension officers from Krishi Vigyan Kendras (KVKs) and agricultural experts. Over 200,000 farmers and professionals have participated in his training programs, farm visits, and workshops. His contributions have been recognized by leading agricultural institutions such as Mahatma Phule Krishi Vidyapeeth (Maharashtra), Punjab Agricultural University (Ludhiana), and Odisha University of Agriculture and Technology. He was also invited to present at the 2018 Conference on Doubling Farmers' Income in New Delhi and an ICAR-organized session for African Ambassadors in Bengaluru.

5. Shri Sharma has received numerous awards in recognition of his pioneering work, including State Awards-Shetinishtha Shetakari Puraskar - Government of Maharashtra, 1983, Vasantrao Naik Krushi Bhushan Puraskar - Government of Maharashtra, 2002, Sendriya Sheti Avalamb Prachar Prasar Samman - Government of Maharashtra, 2003, Vanarai Puraskar - Vanarai, Pune, 2004, Pandit Dindayal Upadhyay Sewa Puraskar - Dindayal Bahuuddeshiya Prasarak Mandal, Yavatmal, 2009, Samaj Sahayog Puraskar - 2009, Jeevan Puraskar - 2009, and Agrovan Smart Shetakari Award - Dainik Sakai (Agrovan), Pune, Maharashtra, 2019. He was felicitated at Akhil Bharatiya Marathi Sahitya Sammelan - Yavatmal, 2019.



श्री सुभाष खेतुलाल शर्मा

श्री सुभाष खेतुलाल शर्मा प्राकृतिक खेती करने और उसका समर्थन करने वाले एक प्रसिद्ध शख्सियत हैं, जो टिकाऊ कृषि तकनीकों के प्रयोग और अनुकूलन के लिए लगभग 30 वर्ष से काम कर रहे हैं। उनके तरीके प्राकृतिक संसाधनों को उनके शुद्धतम रूप में संरक्षित करने को प्राथमिकता देते हैं, जिससे विष-मुक्त कृषि उत्पादों का उत्पादन सुनिश्चित होता है।

2. 13 दिसंबर, 1952 को महाराष्ट्र के यवतमाल में जन्मे, श्री शर्मा ने यवतमाल के अमोलकचंद कॉलेज से बी.कॉम. I की डिग्री हासिल की। श्री शर्मा की कृषि तकनीक में एक महत्वपूर्ण नवप्रवर्तन इंटरसेप्टेड फरो के साथ कंटूर फार्मिंग है, जिससे कुशल जल भंडारण और रिसाव सुनिश्चित होता है जो भूजल की पुनःपूर्ति में योगदान करता है। उनका तरीका न सिर्फ पानी की अधिकता से फसल को होने वाले नुकसान को रोकता है, बल्कि टिकाऊ सिंचाई प्रणालियों का भी समर्थन करता है।

3. श्री शर्मा की तकनीकों के सबसे महत्वपूर्ण प्रभावों में खेती की लागत में अच्छी-खासी कमी आना शामिल है। रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, कृमिनाशकों और खरपतवारनाशकों का उपयोग खत्म करके, किसान मिट्टी में जैविक कार्बन का उच्च स्तर प्राप्त करते हैं जिसकी मात्रा 0.5 से बढ़कर 2 तक हो जाती है जिससे मिट्टी की उर्वरता और उत्पादकता में सुधार होता है। उनकी प्रणाली से मिट्टी की छिद्रता, जैविक गतिविधि और समग्र फसल स्वास्थ्य में सुधार होता है। कीटनाशकों और कृमिनाशकों का बिल्कुल प्रयोग न करने से लाभकारी कीटों और पक्षियों के संरक्षण में मदद मिलती है, ये स्वाभाविक रूप से कीटों को नियंत्रित करते हैं। इसके अतिरिक्त, मिश्रित फसल उगाने, फसल चक्रण और खेतों के किनारे पेड़ लगाने से कीटों के संक्रमण को कम करके और तापमान स्थिरता बनाए रखकर पारितंत्र का संतुलन बनाए रखने में मदद मिलती है। इसके अतिरिक्त, प्राकृतिक खेती के उनके प्रचार ने किसानों को गाय पालने के लिए प्रोत्साहित किया है, जिससे टिकाऊ कृषि को और समर्थन मिलता है।

4. श्री शर्मा ने किसानों, शोधकर्ताओं, एनजीओ कार्यकर्ताओं और विज्ञान कृषि केन्द्रों (केवीके) के कृषि विस्तार अधिकारियों तथा कृषि विशेषज्ञों के बीच अपनी तकनीकों का सक्रिय रूप से प्रचार-प्रसार किया है। 200,000 से अधिक किसानों और पेशेवरों ने उनके प्रशिक्षण कार्यक्रमों, फार्म दौरों और कार्यशालाओं में भाग लिया है। महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ (महाराष्ट्र), पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (लुधियाना) और ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय जैसे प्रमुख कृषि संस्थानों द्वारा उनके योगदान को मान्यता दी गई है। उन्हें नई दिल्ली में किसानों की आय दोगुनी करने संबंधी 2018 के सम्मेलन और आईसीएआर द्वारा बेंगलुरु में अफ्रीकी राजदूतों के लिए आयोजित सत्र में प्रस्तुति देने के लिए भी आमंत्रित किया गया था।

5. श्री शर्मा को उनके महत्वपूर्ण कार्य के लिए कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें राज्य पुरस्कार— शेतनिष्ठा शेतकरी पुरस्कार — महाराष्ट्र सरकार, 1983, वसंतराव नाइक कृषि भूषण पुरस्कार — महाराष्ट्र सरकार, 2002, सेन्द्रिया शेती अवलंब, प्रचार प्रसार सम्मान — महाराष्ट्र सरकार, 2003, वनराई पुरस्कार — वनराई, पुणे, 2004, पंडित दीनदयाल उपाध्याय सेवा पुरस्कार — दीनदयाल बहुउद्देशीय प्रसारक मंडल, यवतमाल, 2009, समाज सहयोग पुरस्कार — 2009, जीवन पुरस्कार — 2009, और एग्रोवन स्मार्ट शेतकरी पुरस्कार — दैनिक सकाई (एग्रोवन), पुणे, महाराष्ट्र, 2019 शामिल हैं। उन्हें अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन — यवतमाल, 2019 में सम्मानित किया गया।